मेन्स मास्टर

खतरनाक यथास्थिति: मणिपुर में जारी शत्रुता पर

परिचय:
विविध समुदायों का मिश्रण मणिपुर, मेइतेई और कुकी-ज़ो समुदायों के बीच आठ महीने की जातीय हिंसा के परिणामों से जूझ रहा है। विस्थापित परिवार, अस्त-व्यस्त जीवन और कमजोर राज्य प्राधिकरण एक भयावह तस्वीर पेश करते हैं, जो तत्काल कार्रवाई और दीर्घकालिक समाधान की मांग करते हैं।

पृष्ठभूमि:
ऐतिहासिक शिकायतें, कथित बहुसंख्यकवाद और ईसाई विरोधी भावना ने संघर्ष के बीज बोए। म्यांमार के साथ खुली सीमा ने और जटिलता बढ़ा दी, मादक पदार्थों की तस्करी और अवैध प्रवासन ने तनाव बढ़ा दिया।

वर्तमान संकट:
विस्थापित परिवार घर लौटने के लिए उत्सुक हैं, लेकिन डर बना रहता है। स्कूली शिक्षा और स्वास्थ्य सेवा नाजुक बनी हुई है, जबकि राज्य की रिट कुकी-ज़ो पहाड़ी क्षेत्रों तक पहुँचने के लिए संघर्ष कर रही है। जातीय ध्रुवीकरण एक लंबी छाया डालता है, जिससे मेल-मिलाप और शांति निर्माण के प्रयासों में बाधा आती है।

मणिपुर की जातीय हिंसा की मुख्य चुनौतियाँ: एक बहुआयामी भूलभुलैया
मणिपुर में मैतेई और कुकी-ज़ो समुदायों के बीच आठ महीने से चल रहे जातीय संघर्ष ने राज्य को एक बहुआयामी संकट में डाल दिया है, जो जटिल चुनौतियों से भरा हुआ है, जो सूक्ष्म समाधान की मांग करता है।
सुरक्षा भूलभुलैया:

- **जोखिमपूर्ण सैन्यीकरण:** दोनों पक्षों के पुलिस स्टेशनों और शिविरों से लूटे गए हथियारों के साथ उग्रवादी संगठनों की मौजूदगी सुरक्षा के लिए एक महत्वपूर्ण खतरा है। गैर-राज्य कर्ताओं को निशस्त्र करना और आगे सैन्यीकरण को रोकना सर्वोपरि है।
- **सुरक्षा बलों में विश्वास का क्षरण**: मणिपुर पुलिस और असम राइफल्स दोनों में उनके संबंधित विरोधी समुदायों में विश्वास की कमी आधिकारिक सुरक्षा तंत्र में विश्वास की कमी पैदा करती है। निष्पक्ष कार्रवाई और सामुदायिक भागीदारी के माध्यम से इन चिंताओं को दूर करना महत्वपूर्ण है।
- **छिद्रपूर्ण सीमा और सीमा पार अपराध:** म्यांमार के साथ छिद्रपूर्ण सीमा अवैध प्रवास, मादक पदार्थों की तस्करी और विद्रोहियों की आवाजाही को सुविधाजनक बनाती है, जिससे सुरक्षा प्रयास जटिल हो जाते हैं। सीमा नियंत्रण को मजबूत करना और अंतरराष्ट्रीय सहयोग को संबोधित करना आवश्यक है।

खंडित सामाजिक ताना-बाना:

- **गहरे बैठे जातीय तनाव**: ऐतिहासिक शिकायतें, कथित बहुसंख्यकवाद और ईसाई विरोधी भावना गहरी जड़ें जमाए हुए हैं, अविश्वास को बढ़ावा दे रहे हैं और हिंसा के चक्र को कायम रख रहे हैं। अंतरसांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना और ऐतिहासिक अन्याय को संबोधित करना इन घावों को भरने की कुंजी है।
- **ध्रुवीकृत मीडिया और नागरिक समाज:** दुर्भाग्य से, मीडिया और नागरिक समाज संगठन भी जातीय आधार पर विभाजित हैं, जिससे एकीकृत भूमिका निभाने की उनकी क्षमता में बाधा आ रही है। संयुक्त पहल के माध्यम से निष्पक्ष रिपोर्टिंग को बढ़ावा देना और समुदायों के बीच पुल बनाना महत्वपूर्ण है।
- **विस्थापन और आघात**: विस्थापित परिवारों को कठिनाई और अनिश्चितता का सामना करना पड़ता है, जबकि समुदाय हिंसा के भावनात्मक आघात से जूझते हैं। तत्काल राहत, पुनर्वास सहायता और आघात उपचार पहल प्रदान करना आवश्यक है।

राजनीतिक और शासन संबंधी जटिलताएँ:

- **नेतृत्व पूर्वाग्रह और समावेशिता का अभाव:** मुख्यमंत्री का मैतेई समुदाय के प्रति कथित पूर्वाग्रह और शरणार्थी स्थिति के साथ संघर्ष को जोड़ने का उनका विवादास्पद रवैया विश्वास को खत्म करता है और समावेशी शासन में बाधा उत्पन्न करता है। निष्पक्ष नेतृत्व को कायम रखना और सभी समुदायों का समान प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है।
- **सीमित राज्य प्राधिकरण:** कुकी-ज़ो पहाड़ी क्षेत्रों को प्रभावी ढंग से नियंत्रित करने में राज्य सरकार की असमर्थता इसकी वैधता के बारे में चिंता पैदा करती है और व्यवस्था बनाए रखने की इसकी क्षमता को कमजोर करती है। शासन क्षमता को मजबूत करना और स्थानीय समुदायों के साथ सहयोग को बढ़ावा देना आवश्यक है।
- **निष्क्रियता और पारदर्शिता की कमी:** संघर्ष समाधान प्रयासों में केंद्र सरकार की कथित अप्रभावीता और पारदर्शिता की कमी निराशा और नाराजगी पैदा करती है। बातचीत और संसाधन आवंटन के माध्यम से शांति निर्माण की दिशा में सक्रिय और पारदर्शी कदम उठाना महत्वपूर्ण है।

सामाजिक आर्थिक असमानताएँ:

- **असमान संसाधन वितरण:** शिक्षा, रोजगार के अवसरों और भूमि तक असमान पहुंच असंतोष को बढ़ावा देती है और मौजूदा जातीय तनाव को बढ़ाती है। दीर्घकालिक स्थिरता के लिए समावेशी विकास और समान संसाधन वितरण को बढ़ावा देना महत्वपूर्ण है।
- **आर्थिक अनिश्चितता:** गरीबी और बेरोजगारी, विशेष रूप से युवाओं के बीच, उन्हें आतंकवादी संगठनों द्वारा भर्ती के प्रति संवेदनशील बनाती है। आर्थिक अवसर पैदा करने और स्थायी आजीविका को बढ़ावा देने से इस चक्र को तोड़ने में मदद मिलेगी।
- **भेदभावपूर्ण प्रथाएँ**: भेदभावपूर्ण प्रथाएँ और अल्पसंख्यक समुदायों का सामाजिक बहिष्कार हाशिये पर जाने के चक्र को कायम रखता है और संघर्ष में योगदान देता है। एक समावेशी समाज का निर्माण करना जो विविधता का जश्न मनाए और भेदभाव का मुकाबला करे, महत्वपूर्ण है।

तुरंत प्रतिसाद:

• **मानवीय सहायता:** विस्थापित परिवारों को अपने जीवन के पुनर्निर्माण के लिए तत्काल राहत और सहायता की आवश्यकता है।

• **आदेश बहाल करना:** राज्य को सभी समुदायों के लिए सुरक्षा सुनिश्चित करते हुए नियंत्रण हासिल करना चाहिए।

• **संवाद को सुगम बनाना:** निष्पक्ष अभिनेताओं को वास्तविक संवाद को बढ़ावा देना चाहिए और मैतेई और कुकी-ज़ो समुदायों के बीच विश्वास का पुनर्निर्माण करना चाहिए।

केंद्र और राज्य की भूमिका:

• **सक्रिय भागीदारी:** केंद्र सरकार को संघर्ष समाधान में पारदर्शी समर्थन, संसाधनों और सक्रिय सहयोग के साथ कदम बढ़ाना चाहिए।

• **समावेशी शासन:** मुख्यमंत्री को निष्पक्ष नेतृत्व को प्राथमिकता देनी चाहिए, समान सुरक्षा सुनिश्चित करनी चाहिए और जातीय आधार पर शिकायतों का समाधान करना चाहिए।

व्यापक दृष्टिकोण:

• **मूल कारणों को संबोधित करना:** दीर्घकालिक स्थिरता के लिए जातीय तनाव को बढ़ावा देने वाली सामाजिक और आर्थिक असमानताओं को संबोधित करना आवश्यक है। समावेशी विकास और विविधता का जश्न मनाना प्रमुख हैं।

• **संस्थानों को मजबूत करना:** प्रभावी शासन, एक जीवंत नागरिक समाज और एक स्वतंत्र प्रेस मानव अधिकारों को बनाए रखने और भविष्य के संघर्षों को रोकने के लिए महत्वपूर्ण हैं।

• **सुलह और उपचार:** आघात के उपचार की पहल और सांस्कृतिक समझ को बढ़ावा देना सद्भाव का भविष्य बनाने के लिए महत्वपूर्ण है।

निष्कर्ष:

उपचार की दिशा में मणिपुर का मार्ग तत्काल संघर्ष समाधान से भी आगे तक फैला हुआ है। यह समावेशी शासन, सामाजिक न्याय और अपनेपन की साझा भावना को बढ़ावा देने के लिए निरंतर प्रतिबद्धता की मांग करता है। केवल तभी हिंसा की गूँज फीकी पड़ सकती है और एकजुट और सामंजस्यपूर्ण मणिपुर की धुन को रास्ता मिल सकता है।

मुक्त आवागमन व्यवस्था पर पुनर्विचार

पृष्ठभूमि:

• 1,643 किमी लंबी भारत-म्यांमार सीमा, जो 1826 में यांडाबू की संधि के माध्यम से स्थापित की गई थी, ने नागा, कुकी, मिज़ोस और चिन जैसे समुदायों को उनकी सहमति के बिना विभाजित कर दिया, कभी-कभी गांवों और घरों को भी विभाजित कर दिया।

• म्यांमार में चीनी प्रभाव से सावधान, भारत ने संबंधों में सुधार करने की मांग की, जिसके परिणामस्वरूप 2018 में एक्ट ईस्ट नीति के हिस्से के रूप में एफएमआर समझौता हुआ।

• समझौते ने सीमा के 16 किमी के भीतर रहने वाले लोगों को बिना वीज़ा के अवकाश, शिक्षा और चिकित्सा देखभाल के लिए यात्रा करने की अनुमति दी, जिसमें सीमा पास एक वर्ष के लिए वैध था।

• सीमा शुल्क स्टेशनों और निर्दिष्ट बाजारों के माध्यम से स्थानीयकृत सीमा व्यापार की भी कल्पना की गई थी।

एफएमआर पर पुनर्विचार करने के कारण:

• **सुरक्षा चिंताएं:**

○ बिना सुरक्षा वाली सीमा उल्फा और एनएससीएन-आईएम जैसे चरमपंथी समूहों की सीमा पार आवाजाही को सुविधाजनक बनाती है, जो म्यांमार के चिन और सागांग क्षेत्रों से संचालित होते हैं।

○ नशीली दवाओं और वन्यजीवों की तस्करी चिंता का विषय है, जो सीमा की छिद्रता के कारण और भी गंभीर हो गई है।

• **मणिपुर संघर्ष:**

○ मैतेई और कुकी-ज़ो समुदायों के बीच जातीय संघर्ष के कारण कुकी-चिन्स पर "अवैध अप्रवासी" और "घुसपैठिए" होने का आरोप लगाया गया।

○ मणिपुर के मुख्यमंत्री ने संघर्ष को एफएमआर से जोड़ा और इसे खत्म करने का आह्वान किया।

• **जातीय तनाव:**

○ कुकी-ज़ो समूहों को डर है कि यदि एफएमआर समाप्त हो जाता है तो उन्हें कलंकित किया जाएगा और हाशिए पर डाल दिया जाएगा, संभावित रूप से "नार्को-आतंकवादी" के रूप में लेबल किया जाएगा और "जातीय सफाया" का सामना करना पड़ेगा।

○ मिजोरम, चीन के साथ मजबूत जातीय संबंधों के साथ, सांस्कृतिक संबंधों को तोड़ने की अपनी क्षमता के कारण इस कदम का विरोध करता है।

प्रवास का पैमाना:

• म्यांमार में गृहयुद्ध के कारण शरणार्थियों की आमद हुई, मणिपुर ने 2022 में 4,300 म्यांमार नागरिकों को वापस भेज दिया और 2023 में 2,187 को पंजीकृत किया।

• मिजोरम ने साझा जातीयता के कारण लगभग 40,000 शरणार्थियों को स्वीकार किया, और स्थिति स्थिर होने के बाद उनकी देखभाल और स्वदेश वापसी के लिए केंद्रीय धन की मांग की।

एफएमआर समाप्त करने का विरोध:

• **मिजोरम:**

○ मुख्यमंत्री चिन के साथ सांस्कृतिक संबंधों को तोड़ने के खिलाफ तर्क देते हैं और उनके साझा इतिहास और जातीयता पर जोर देते हैं।

○ वह सीमा को एक मनमानी ब्रिटिश रचना के रूप में देखता है और विभाजन के पार संबंधों को संरक्षित करने में विश्वास करता है।

• **नागालैंड:**

○ नागा स्टूडेंट्स फेडरेशन ने प्रस्तावित कदम की निंदा करते हुए इसे "प्रतिगामी" और क्षेत्रीय स्थिरता के लिए खतरा बताया।

○ वे नागाओं और सीमा पार चिन-बसे हुए क्षेत्र के बीच ऐतिहासिक संबंधों को मान्यता देने की मांग करते हैं।

अनसुलझी समस्या:

• सुरक्षा और सांस्कृतिक संबंधों को संतुलित करना:

○ विभाजित समुदायों के बीच पारंपरिक आवाजाही और सांस्कृतिक संबंधों को बाधित किए बिना सीमा सुरक्षा सुनिश्चित करना।

• शरणार्थियों और जातीय संबंधों को संबोधित करना:

○ शरणार्थियों के लिए मानवीय समाधान खोजना और जब संभव हो तो उनकी वापसी की सुविधा प्रदान करना।

○ जातीय प्रोफाइलिंग से निपटना और मूल की परवाह किए बिना सभी समुदायों के साथ उचित व्यवहार सुनिश्चित करना।

• **ऐतिहासिक शिकायतें और राजनीतिक तनाव:**

• **शरणार्थियों और जातीय संबंधों को संबोधित करना:**
  ◦ शरणार्थियों के लिए मानवीय समाधान खोजना और जब संभव हो तो उनकी वापसी की सुविधा प्रदान करना।
  ◦ जातीय प्रोफाइलिंग से निपटना और मूल की परवाह किए बिना सभी समुदायों के साथ उचित व्यवहार सुनिश्चित करना।
• **ऐतिहासिक शिकायतें और राजनीतिक तनाव:**
  ◦ सीमा के विभाजन के इतिहास को स्वीकार करना और विभाजित समुदायों के बीच पुरानी शिकायतों को संबोधित करना।
  ◦ सुरक्षा चिंताओं को संयुक्त रूप से संबोधित करने के लिए भारत और म्यांमार के बीच राजनीतिक बातचीत और सहयोग को बढ़ावा देना।

कुल मिलाकर:
एफएमआर समझौता सुरक्षा चिंताओं, ऐतिहासिक शिकायतों और जातीय तनावों के जटिल जाल में फंस गया है। एक स्थायी समाधान खोजने के लिए एक सूक्ष्म दृष्टिकोण की आवश्यकता होती है जो मौजूदा विभाजनों को बढ़ाए बिना सभी आयामों को संबोधित करता है। इस संवेदनशील मुद्दे को सुलझाने और एक शांतिपूर्ण और स्थिर सीमा क्षेत्र का मार्ग प्रशस्त करने के लिए बातचीत, आपसी समझ और सांस्कृतिक संबंधों का सम्मान महत्वपूर्ण है।

एफपीओ को बढ़ाना

जबकि किसान उत्पादक संगठन (एफपीओ) और स्वयं सहायता समूह (एसएचजी) दोनों का लक्ष्य ग्रामीण समुदायों को सशक्त बनाना है, उनके प्रक्षेप पथ में एक महत्वपूर्ण असमानता मौजूद है। महिलाओं के आर्थिक और सामाजिक विकास के लिए नाबार्ड द्वारा संचालित एसएचजीबीएलपी, एक वैश्विक माइक्रोफाइनेंस सफलता की कहानी बन गई है। सामूहिक किसान शक्ति का लाभ उठाने के लिए 2013 में स्थापित एफपीओ, पैमाने और प्रभाव के समान स्तर तक नहीं पहुंच पाए हैं। इस अंतर के पीछे के कारणों की जांच भविष्य की ग्रामीण विकास पहलों के लिए मूल्यवान सबक प्रदान कर सकती है।

पैमाना और आउटरीच: एक स्पष्ट विरोधाभास:

• **एसएचजीबीएलपी एक मील आगे है:** भारत में लगभग 1.2 करोड़ एसएचजी हैं, जिनमें से 88% महिलाएं हैं। एसएचजी की सफलता की कहानियों में केरल में कुदुम्बश्री, बिहार में जीविका, महाराष्ट्र में महिला आर्थिक विकास महामंडल और हाल ही में लूम्स ऑफ लद्दाख शामिल हैं।

• **एफपीओ पिछड़ गए:** मार्च 2023 तक 22 लाख किसानों के लिए 24,183 एफपीओ के साथ, एफपीओ ने समान स्तर का पैमाना हासिल नहीं किया है, जो उनके गठन और जुड़ाव में संभावित बाधाओं का संकेत देता है।

मतभेदों को उजागर करना:

• **गठन की जटिलता:** एसएचजी को सरल नियमों और 10-20 सदस्यों की आवश्यकता होती है, जबकि एफपीओ में अधिक कागजी कार्रवाई और एजेंसियों में अलग-अलग सदस्य आवश्यकताएं शामिल होती हैं, जैसे एसएफएसी की 1000 बनाम नाबार्ड की 300-500।

• **जमीनी स्तर पर समर्थन:** स्वयं सहायता समूहों को गैर सरकारी संगठनों और एनआरएलएम जैसे राज्य मिशनों के समर्पित समर्थन से लाभ हुआ, जिससे जमीनी स्तर पर उपस्थिति सुनिश्चित हुई और प्रयासों को बढ़ाया गया। एफपीओ के पास जमीनी स्तर पर ऐसे सुसंगत, केंद्रित समर्थन का अभाव है।

• **क्रेडिट पहुंच बाधाएं:** पीएसएल (प्राथमिकता क्षेत्र ऋण) जैसी योजनाओं के बावजूद, एफपीओ को ऋण बाधाओं का सामना करना पड़ता है। बैंक व्यवहार्य व्यावसायिक योजनाओं की मांग करते हैं, जिन्हें कई एफपीओ सीमित बाजार विशेषज्ञता के कारण बनाने में संघर्ष करते हैं। उत्पाद एकत्रीकरण के बाद विश्वसनीय बाज़ार संपर्कों की कमी से बैंक का विश्वास और कम हो जाता है।

समूह गतिशीलता और स्वामित्व: एसएचजी मजबूत समूह गतिशीलता और साझा जिम्मेदारी को बढ़ावा देते हैं, जबकि एफपीओ अक्सर इन महत्वपूर्ण पहलुओं के साथ संघर्ष करते हैं। इसके अतिरिक्त, किसान सदस्यों को स्वामित्व का क्रमिक हस्तांतरण, जो एसएचजी के लिए एक प्रमुख सफलता कारक है, एफपीओ में आसानी से लागू नहीं किया जाता है।

एसएचजीबीएलपी से सीखना: एफपीओ परिवर्तन के लिए एक खाका:

• **सुव्यवस्थित गठन:** एफपीओ गठन प्रक्रियाओं को सार्वभौमिक बनाना और सरल बनाना, एजेंसी-विशिष्ट विविधताओं और प्रशासनिक बाधाओं को कम करना।

• **जमीनी स्तर पर समर्थन को मजबूत करना:** एफपीओ को जमीनी स्तर पर मार्गदर्शन और समर्थन प्रदान करने के लिए मजबूत ग्रामीण उपस्थिति वाली समर्पित एजेंसियों या विभागों की स्थापना करना।

• **ज्ञान अंतर को पाटें:** एफपीओ को व्यवसाय योजना, बाजार संपर्क, जोखिम प्रबंधन और वित्तीय साक्षरता के लिए प्रशिक्षण और संसाधनों से लैस करें।

• **फोस्टर बैंक-एफपीओ साझेदारी:** बैंकों को एफपीओ की व्यवहार्यता को पहचानने और समर्पित ऋण योजनाओं और साझेदारियों के माध्यम से उनकी सफलता में निवेश करने के लिए प्रोत्साहित और शिक्षित करना।

• **ग्रामीण जागरूकता बढ़ाएँ:** अधिक भागीदारी और स्वामित्व को प्रोत्साहित करने के लिए ग्रामीण समुदायों के बीच एफपीओ और उनके लाभों के बारे में जागरूकता बढ़ाएँ।

• **सदस्यों को सशक्त बनाएं, स्वामित्व हस्तांतरित करें:** धीरे-धीरे एफपीओ सदस्यों को स्वामित्व और जिम्मेदारी हस्तांतरित करें, समुदाय की मजबूत भावना और दीर्घकालिक स्थिरता को बढ़ावा दें।

संख्याओं से परे: प्रेरक सफलता की कहानियाँ:
हालाँकि चुनौतियाँ मौजूद हैं, एफपीओ में अपार संभावनाएं हैं। लेख में महाराष्ट्र में अंगूर विपणन और ओडिशा में जैविक हल्दी जैसे सफल उदाहरणों पर प्रकाश डाला गया है, जो इन संगठनों की परिवर्तनकारी शक्ति को प्रदर्शित करता है।

ग्रामीण समृद्धि के लिए एक सहयोगात्मक प्रयास:
एफपीओ की सफलता सहयोगात्मक प्रयास पर निर्भर करती है। सरकार, सार्वजनिक संस्थानों, बैंकों, विकास एजेंसियों और गैर सरकारी संगठनों को पहचानी गई चुनौतियों का समाधान करने और एफपीओ को फलने-फूलने के लिए आवश्यक सहायता प्रदान करने के लिए मिलकर काम करना चाहिए। एसएचजीबीएलपी अनुभव से सीखने और प्रस्तावित समाधानों को लागू करने से एफपीओ की पूरी क्षमता को उजागर करने, अधिक आय सृजन, ग्रामीण विकास और किसानों और उत्पादकों के लिए अधिक सशक्त भविष्य को बढ़ावा देने में मदद मिल सकती है।

प्रीलिम्स बूस्टर

सरकार ने कोयला गैसीकरण परियोजनाओं के लिए ₹8,500 करोड़ प्रदान किए

- 💰 केंद्रीय मंत्रिमंडल ने कोयला गैसीकरण के लिए ₹8,500 करोड़ की मंजूरी दी, वित्त वर्ष 2030 तक 100 मिलियन टन का लक्ष्य रखा गया है।
- 📊 सीसीईए ने कोयला-से-एसएनजी और कोयला-से-अमोनियम नाइट्रेट सुविधाओं के लिए कोल इंडिया के इक्विटी निवेश को हरी झंडी दी।

🎯लक्ष्य: मेथनॉल, अमोनिया, अमोनियम नाइट्रेट और ओलेफिन पर आयात निर्भरता कम करें।
- 💰 सार्वजनिक और निजी क्षेत्रों में गैसीकरण परियोजनाओं के लिए वित्तीय परिव्यय को तीन श्रेणियों में विभाजित किया गया है।
- 🏗️ पश्चिम बंगाल और ओडिशा परियोजनाओं के लिए सीआईएल का इक्विटी निवेश FY29 तक पूरा होने की उम्मीद है।
- 🏢 श्रेणी II और III में इकाई चयन के लिए प्रतिस्पर्धी और पारदर्शी बोली प्रक्रियाएं।
- 🏭 कोयला गैसीकरण प्रक्रिया:
  - ऑक्सीजन और/या भाप की नियंत्रित मात्रा के साथ उच्च तापमान पर रासायनिक प्रतिक्रिया के माध्यम से कोयले को कार्बन मोनोऑक्साइड, हाइड्रोजन, कार्बन डाइऑक्साइड और जल वाष्प से बनी संश्लेषण गैस (सिनगैस) में परिवर्तित करता है।
- 🌬️ पर्यावरणीय लाभ:
  - सीधे कोयले के दहन की तुलना में स्वच्छ, क्योंकि सल्फर और पारा जैसी अशुद्धियों को सिनगैस से हटाया जा सकता है।
  - कोयले के उपयोग से जुड़े कार्बन डाइऑक्साइड उत्सर्जन को कम करने के लिए कार्बन कैप्चर और स्टोरेज (सीसीएस) की क्षमता प्रदान करता है।
- 💡 बहुमुखी अनुप्रयोग:
  - सिनगैस का उपयोग बिजली उत्पादन, सिंथेटिक प्राकृतिक गैस, रसायन और मेथनॉल और इथेनॉल जैसे ईंधन के लिए किया जा सकता है।
  - प्रत्यक्ष रूप से कम किए गए लोहे (डीआरआई) प्रक्रिया के माध्यम से इस्पात उद्योग में एक कम करने वाले एजेंट के रूप में भी उपयोग किया जाता है।
- 🌍सामरिक महत्व:
  - कोयले के उपयोग का एक स्वच्छ तरीका प्रदान करता है, जिससे यह भारत जैसे बड़े कोयला भंडार वाले देशों के लिए एक रणनीतिक विकल्प बन जाता है, जो स्वच्छ ऊर्जा समाधान चाहते हैं।
- 🏭राष्ट्रीय कोयला गैसीकरण मिशन:
  - कोयला मंत्रालय ने जागरूकता पैदा करने, रोडमैप विकसित करने और कोयला गैसीकरण परियोजनाओं को लागू करने के लिए राष्ट्रीय कोयला गैसीकरण मिशन की स्थापना की है।
  - इसका उद्देश्य गैसीकरण क्षमता का मानचित्रण करना, स्वदेशी प्रौद्योगिकी विकसित करना, विपणन रणनीतियाँ बनाना और हितधारकों के साथ समन्वय करना है।

आखिर क्यों तुर्की ने स्वीडन की नाटो सदस्यता की मांग का समर्थन किया है

🤝 स्वीडन की नाटो सदस्यता:
- तुर्की और हंगरी के विरोध को पार करते हुए तुर्की की संसद से समर्थन प्राप्त किया।
- 2022 में यूक्रेन पर रूस के आक्रमण के बाद ऐतिहासिक तटस्थता को त्यागने से उपजा।
- 🛡️ सामूहिक रक्षा:
  - नाटो सदस्यता सामूहिक रक्षा सुनिश्चित करती है, किसी सदस्य के क्षेत्र पर हमले को पूरे गठबंधन पर हमले के रूप में मानती है।
- 🇹🇷तुर्की की चिंताएँ और समर्थन:
  - शुरू में कुर्दिस्तान वर्कर्स पार्टी (पीकेके) जैसे समूहों और कुरान जलाने वाले विरोध प्रदर्शनों पर स्वीडन के रुख के बारे में चिंताओं के कारण स्वीडन की बोली का विरोध किया।
  - आतंकवाद विरोधी कानूनों को कड़ा करके, पीकेके की गतिविधियों पर नकेल कस कर और तुर्की को हथियारों की बिक्री पर प्रतिबंध हटाकर चिंताओं का समाधान किया गया।
- 💰 एर्दोगन का जुड़ाव:
  - एर्दोगन ने स्वीडन के लिए तुर्की के समर्थन को अमेरिका द्वारा अंकारा को 40 एफ-16 लड़ाकू विमानों की संभावित बिक्री से जोड़ा।
- 🌍सामरिक महत्व:
  - स्वीडन की नाटो सदस्यता लगभग पूरे बाल्टिक सागर तट के साथ नाटो क्षेत्र का विस्तार करेगी, रक्षा संचालन की सुविधा प्रदान करेगी और उन्नत सैन्य क्षमताएं लाएगी।

पशुधन उत्पादन में वृद्धि किसानों को प्रकृति की अनिश्चितताओं से बचाती है

🌾 खाद्य उत्पादन परिदृश्य में बदलाव:
- नीति आयोग के आंकड़ों से पता चलता है कि पशुधन उत्पादों की हिस्सेदारी 1980-81 में 17.6% से बढ़कर 2020-21 में 36.9% हो गई है।

- 📈 प्रति व्यक्ति उत्पादन वृद्धि:
  - 1960 के दशक के बाद से मांस, मछली, दूध, फल और सब्जियों का उत्पादन तीन गुना हो गया है, जबकि अंडे के उत्पादन में आठ गुना वृद्धि दर्ज की गई है।
  - दालों और बाजरा को छोड़कर, अन्य सभी वस्तुओं का उत्पादन 1950-51 और 2020-21 के बीच जनसंख्या वृद्धि से अधिक हो गया है।

- 📊 बाज़ार-संचालित विकास:
  - नीति आयोग का वर्किंग पेपर बाजार संकेतों के प्रति किसानों की प्रतिक्रिया पर प्रकाश डालता है और उत्पादन वृद्धि को प्रभावित करने वाले मांग-संचालित कारकों पर जोर देता है।

Livestock produce surges

Egg, milk, meat and fish register increase in output

Per capita production of major food commodities since 1960s (kg/year)

Item	1961–70	1971–80	1981–90	1991–00	2001–10	2011–20	CAGR (%)
Cereals	121.0	135.1	151.8	169.0	173.1	215.0	12.2
Pulses	23.3	18.4	16.3	14.6	12.3	15.7	-7.6
Oilseeds	15.3	15.3	16.8	23.2	21.6	24.1	9.5
Sugar	24.1	24.5	26.0	30.3	27.9	29.5	4.1
Fruits	23.2	31.8	33.1	41.2	49.7	69.7	24.6
Vegetables	47.6	68.9	72.4	77.3	97.7	133.5	22.9
Egg	0.4	0.7	1.0	1.4	2.1	3.3	52.5
Meat & Fish	4.3	4.6	5.0	6.9	8.3	13.3	25.3
Milk	43.2	42.1	55.6	70.8	88.0	121.2	22.9

Per capita per day food produced in India 1950-51 to 2021-22 (kg)

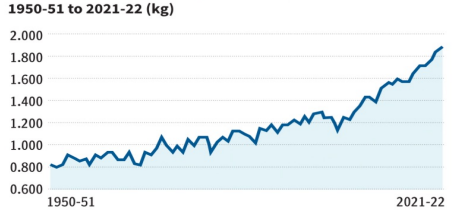

Source: NITI Ayog working paper by Ramesh Chand and Jaspal Singh

- 🍎⚪ उत्पादन वृद्धि में विरोधाभास:
  - फलों, सब्जियों, दूध, अंडे, मांस और मछली में वृद्धि अनाज और गन्ने के विपरीत है, जिसे सरकारी मूल्य तंत्र द्वारा भारी समर्थन प्राप्त है।

- 🌱 गतिशील कृषि परिदृश्य:
  - भारत का कृषि परिदृश्य गतिशील है, किसान खाद्य उत्पादन विविधीकरण में सक्रिय रूप से भाग लेते हैं और चुनौतियों का सामना करते हैं।

- 🐄🥛 व्यावहारिक प्रतिक्रिया:
  - पशुधन उत्पादों का बढ़ता महत्व बाजार की गतिशीलता और बदलती उपभोक्ता प्राथमिकताओं के प्रति व्यावहारिक प्रतिक्रिया को दर्शाता है।

- 🌾 कृषि का भविष्य:
  - जैसे-जैसे भारत हरित क्रांति से "अमृत काल" की ओर बढ़ रहा है, किसानों का लचीलापन और अनुकूलन क्षमता कृषि के भविष्य को आकार देने में महत्वपूर्ण हो जाती है।